दैनिक नैतिक प्रभात

(बाल कहानी संग्रह) जनवरी- 2024

(बाल कहानी संग्रह)

दैनिक नैतिक प्रभात

माह जनवरी 2024

क्रमांक	बाल कहानी	लेखक	पेज
1	हेल्मेट	शमा परवीन	1
2	शैक्षणिक भ्रमण	शिखा वर्मा	2
3	बड़ो की बातें	जुगल किशोर त्रिपाठी	3
4	क्या करूँ?	दीवान सिंह कठायत	4
5	कड़वा सबक	दीप्ति सक्सेना	5
6	घमण्डी किसान	शिखा वर्मा	6
7	चीकू	शमा परवीन	7
8	शुभ प्रभात	दीवान सिंह कठायत	8
9	तालियाँ	शिखा वर्मा	9
10	जिज्ञासा	शमा परवीन	10
11	पेंड़ पौधे	जुगल किशोर त्रिपाठी	11

संकलन

मिशन शिक्षण संवाद

संस्कार संदेश दिनांक - 16.01.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 01/2024

बाल कहानी दिन- मंगलवार

मिशन शिक्षण संवाद

हेल्मेट

रविवार का दिन था। रोहन घर पर ही पिताजी की सहायता से होमवर्क कर रहा था। रविवार को रोहन के पिता भी अपने काम से छुट्टी पाकर घर पर ही रहते थे, इसलिए रोहन होमवर्क करने के लिए पिता जी की सहायता लेता था। बाकी दिन माँ ही रोहन को होमवर्क कराने में मदद करती थी।

होमवर्क करते समय रोहन को ध्यान आया कि उसकी हिन्दी की कॉपी भर गई है। ये बात उसने पिता जी को बतायी।पिता जी ने कहा-, "बेटा! आज मेरे पास वक़्त है। तुम होमवर्क करो, मैं घर का राशन और तुम्हारी कॉपी लेने बाज़ार जा रहा हूँ।"

ये कह कर पिता जी ने घर से अपनी बाइक बाहर निकाली और एक बड़ा झोला लेकर बाइक स्टार्ट करने लगे। तभी रोहन ने देखा कि पिता जी बिना हेल्मेट के ही जा रहे है। रोहन ने तुरन्त हेल्मेट लेकर पिता जी को आवाज लगायी और पिताजी ने रुककर पूछा-, "क्या हुआ बेटा? और कुछ चाहिए क्या? बताओ ले आऊँगा!" "नहीं पिता! जी और कुछ नहीं चाहिए। आप ये अपना हेल्मेट भूल गये है। ये लीजिये, इसे पहन लीजिए।" "नहीं बेटा! मैं भूला नही हूँ बेटा! पास ही तो बाज़ार है। बस! यूँ गया और यूँ आया। जब दूर जाऊँगा। तब लगा लूँगा। इसे घर पर ही रख दो।" "पिताजी! आप ये गलत कर रहे है। यातायात के नियमों का पालन करना बहुत जरूरी है। विद्यालय में गुरुजी ने हमें बताया है कि यातायात के नियमों का पालन करने से बहुत लाभ है। हम सब को इसके लिए जागरुक होना चाहिए। यातायात के नियमों का पालन करना हम सब का कर्तव्य है।" रोहन के पिता को रोहन की बात समझ आ गयी। तुरन्त हेल्मेट लेकर पहन लिया और बाज़ार चले गये।

कुछ देर बाद बाज़ार से आने के बाद रोहन के लिये चॉकलेट और कॉपी लाये। रोहन को चॉकलेट, कॉपी देते हुए पिता जी बोले-, "बेटा! आज तूने मुझे चालान से बचा लिया। आज गहन जाँच चल रही थी। मेरे दोस्त गुप्ताजी का आज चालान कट गया। अगर हेल्मेट न देता तू, तो मैं भी मुसीबत में फँस जाता, इसलिए बेटा ये बहुत सी चॉकलेट तुम्हारे लिए।"

रोहन कॉपी और चॉकलेट पाकर बहुत खुश हुआ। रोहन ने पिता जी से वादा लिया कि वो यातायात के नियमों का पालन हमेशा करेंगे और लोगों को भी इसके लिए जागरुक करेंगे।

संस्कार सन्देश-

कोई भी वाहन चलाते समय, कहीं भी जाते समय हमें हमेशा अपनी सुरक्षा के लिए हेल्मेट का प्रयोग करना चाहिए।

लेखिका-

शमा परवीन
बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार संदेश दिनांक - 17.01.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 02/2024

बाल कहानी दिन- बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

शैक्षणिक भ्रमण

आज विद्यालय के बच्चों में सुबह से ही बहुत उत्साह था। कल उनके गुरूजी ने कहा था कि-, "आज के दिन सभी बच्चों में से पाँच बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के लिए कुछ दर्शनीय स्थानों पर ले जाया जायेगा।" सभी बच्चे चाहते थे कि उन्हें भी ये अवसर दिया जाये, लेकिन गुरूजी ने शर्त रखी थी, कि जो बच्चे उनकी कुछ शर्तों को पूरा करते हैं, वे ही जा सकेंगे। वे शर्तें थीं कि...

पहली- बच्चे को व्यवहार अनुशासित हो।

दूसरी- बच्चे की विद्यालय की वेशभूषा अच्छी स्थिति में हो। तीसरी- बच्चे का सभी विषयों का कार्य पूरा हो।

चौथी- बच्चे की उपस्थिति इस माह अस्सी प्रतिशत रही हो। पाँचवीं- बच्चे को अर्धवार्षिक परीक्षा में भी अच्छे अंक मिले हों।

जो भी इन शर्तों को पूरा करता हो, वही टूर पर जा सकेगा। फिर क्या था! सभी में और अधिक उत्साह बढ़ चला। पर कुछ को निराशा ही हाथ लगी। शरारतें करना, कक्षा में शोर मचाना, विद्यालय गन्दी वेशभूषा में आना, प्रतिदिन न आना, अपना काम पूरा न करना, परीक्षा को गम्भीरता से न लेना आदि ये बातें इतना नुकसान करवा देती होंगी, कभी सोचा भी नहीं था। प्रत्येक कक्षा से दो-दो बच्चों का चयन हुआ। कक्षा आठ के अर्पित को भी चुना गया। घर आकर जब उसने ये बात सबको बतायी तो उसके पिताजी ने कहा-, "कहीं जाने की जरूरत नहीं है। पढ़ाई करो, घूमना-फिरना तो सारी उम्र होता रहेगा।" बेचारे अर्पित का विद्यालय में आखिरी साल था। इसके बाद तो वह दूसरे विद्यालय में चला जायेगा। वहाँ ये अवसर मिलेगा भी या नहीं! लेकिन पिताजी की बात भी माननी ही थी। अर्पित ने अगले दिन विद्यालय आकर भ्रमण पर जाने से मना कर दिया। अब तो उसकी जगह कुशल को जाने का अवसर मिला। अगले दिन पूरी तैयारी से सभी बच्चे गुरूजी के साथ बस से शैक्षणिक भ्रमण पर चले गये। कई ऐतिहासिक और धार्मिक स्थानों की रोमांचक यात्रा सभी के लिए शानदार और अविस्मरणीय अनुभव थी। बच्चे अपने शिक्षकों के साथ खेल-खेल में जाने कितनी जानकारी ले रहे थे और दूसरे विद्यालय के बहुत सारे बच्चों के साथ भी मिलकर खूब खुश थे। अगले दिन विद्यालय में शिक्षक-अभिभावक बैठक थी। इस बैठक में उपस्थित अभिभावकों के समक्ष सभी बच्चों को अपनी यात्रा के अनुभव बताते हुए सुना। अर्पित के पिताजी को बहुत पछतावा हो रहा था। उन्होंने अपने बेटे के उतरे हुए चेहरे को देखा। मन ही मन तय किया कि आगे से वे उसे ऐसे किसी भी अवसर को खोने नहीं देंगे, जो उनके बेटे की शिक्षा से सम्बन्धित हो। वे ये बात अच्छी तरह समझ चुके थे कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही व्यावहारिक ज्ञान के लिए बाहर की दुनिया से बच्चों का परिचय बहुत आवश्यक है।

संस्कार सन्देश-

समाज के बारे में बहुत सारी बातें जानने के लिए, कुछ नया सीखने के लिए शैक्षणिक भ्रमण बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं।

लेखिका-

शिखा वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 18-01-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 03/2024
बाल कहानी दिन - बृहस्पतिवार
मिशन शिक्षण संवाद

बड़ों की बातें

किसी गाँव में रामू अपने माता-पिता के साथ रहता था। गाँव के पास ही घना जंगल था। श्यामू को रोज स्कूल जाते समय कुछ दूर पर वह जंगल दिखायी देता था। वह अपने दोस्तों और शिक्षकों से उस जंगल में जाने की इच्छा व्यक्त करता था। सभी उसे उस जंगल में जाने से रोकते थे। उस जंगल में जंगली और भयानक जानवरों के बारे में सुनकर वह भयभीत तो होता था, लेकिन जंगल देखने की इच्छा को मन से दूर नहीं कर पाया। वह सोचता था कि- आखिर उस जंगल में ऐसा क्या है, जो सभी लोग मुझे वहाँ जाने से रोकते हैं।

एक दिन उसने अपनी माँ से कहा कि- , "माँ! एक बात बताओ!"

माँ ने कहा-, "हूँ..बता रामू क्या बात है?" रामू झट बोल पड़ा -, "माँ! मैं स्कूल जाता हूँ, तो मुझे वह जंगल रोज कुछ दूरी पर दिखायी देता है। उस जंगल में क्या है?" माँ ने कहा कि-, "बेटा! जंगल ही है। जंगल में पेड़-पौधों के अलावा और क्या होता है? अरे! तू रोज स्कूल जाते समय देखता है और फिर भी पूछता है कि जंगल में क्या है?"

"ठीक है माँ!" रामू यह कहकर जल्दी से बस्ता लेकर स्कूल चला गया।

शाम को जब सभी बच्चे स्कूल से वापस आ गये और रामू देर तक घर नहीं आया तो रामू के माँ-बापू को बहुत चिन्ता हुई। तभी रामू की माँ को सुबह रामू और उसकी कही बातें याद आयीं। उसने अपने पति को सारी बातें बतायीं और दोनों कुछ ग्रामीणों को लेकर जंगल की ओर गये।

जंगल में बहुत खोजने पर अन्त में एक जगह सियार को ऊपर एक चट्टान की ओर टकटकी लगाये हुए देखा। उन्हें कुछ सन्देह हुआ और वे तुरन्त सभी को बुलाकर एक साथ उस ओर गये। गाँव वालों का हल्ला सुनते ही सियार वहाँ से भाग गया। सभी ने जैसे ही ऊपर देखा तो चट्टान पर रामू भयभीत सा सिकुड़ा बैठा हुआ था। रामू ने सभी को देखा तो तुरन्त आवाज लगायी-, "मैं रामू हूँ। इस सियार के डर से यहाँ छिपा था। यह सियार यहाँ नहीं चढ़ सकता था, इसलिए मैं यहाँ ऊपर आ गया। मुझे यहाँ से नीचे उतारो।"

रामू के इतना कहते ही उसके माता-पिता 'रामू..रामू मेरा बेटा' कहते हुए उसे वहाँ से नीचे ले आये और उसके ऊपर हाथ फेरने लगे कि कहीं उसे चोट तो नहीं लगी है! फिर दोनों ने उसे गले लगाया और उठाकर सभी लोगों के बीच में ले आये। गाँव के मुखिया ने कहा कि-, मुझे पता है रामू कि तुम बहुत दिनों से जंगल में आने के लिए तरस रहे थे। तुम्हें तुम्हारे दोस्तों और शिक्षकों ने मना भी किया था, फिर भी तुम नहीं माने और अपनी जान खतरे में डाल दी।"

रामू बोला-, "सब लोग मुझे माफ कर दें! मैं आज के बाद अभी इधर आने की सोचूँगा भी नहीं।" मुखिया-, "अब तो तुम तो ठीक है, कोई भी यहाँ आने की नहीं सोचेगा।" मुखिया के साथ सभी ग्रामीण भी हँसने लगे और वे अपने गाँव में आ गये।

हमें बड़ों की बातों को हमेशा स्मरण रखना चाहिए। इनकी बातों में हमारा कल्याण निहित होता है।

लेखक
जुगल किशोर त्रिपाठी प्रा० वि०- बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

संस्कार सदेश दिनांक - 19-01-2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 04/2024

बाल कहानी दिन - शुक्रवार

मिशन शिक्षण संवाद

क्या करूँ?

"हाँ, गुरु! हैं हम। जानते हो, किसे कहते हैं गुरु? अन्धकार को दूर करने वाला, आदर्श दिखाने वाला। आपका यह व्यवहार सहन करने योग्य नहीं। कर्तव्य के प्रति समर्पण, शिक्षक का स्वभाव होना चाहिए।" कहते हुए गरिमामयी व्यक्तित्व के धनी प्रधानाध्यापक श्री लाल सिंह लटवाल अपने साथी अध्यापक श्री प्रशान्त किशोर त्यागी पर बिफर पड़े। त्यागी जी मैदानी क्षेत्र से ताल्लुक रखते थे। वह दो वर्ष पूर्व लटवाल जी के विद्यालय में प्रथम नियुक्ति पाकर पद स्थापित हुए थे। वे अक्सर अवकाश पर घर जाने, जाकर घर पर बने रहने के बहाने ढूँढा करते। पाठशाला में शिक्षण के दौरान अक्सर फोन से चिपके मिलते व अनमने ढंग से बच्चों को पढ़ाया करते। बच्चे उनका शिक्षण ठीक से आत्मसात न कर पाते थे। पहाड़ पर की जा रही सेवा उन्हें दण्ड स्वरूप सी लगती, जिसे वह गाहे-बगाहे बोल दिया करते थे। पानी सर से ऊपर चढ़ जाने पर आज प्रधानाध्यापक को यह कहना ही पड़ा।

प्रधानाध्यापक की लताड़ से आहत हो त्यागी जी अपने उच्च सम्पर्क सूत्रों से तिकड़म भिड़ा मैदानी क्षेत्र से लगे विद्यालय में स्थानान्तरित होकर चले गये और उनकी जगह दुर्गम से आयी एक शिक्षिका ने शीघ्र ही भर ली। शिक्षिका लटवाल जी के आदर्शों के अनुकूल निकलीं। शीघ्र ही विद्यालय का शैक्षिक व भौतिक वातावरण काफी आगे निकल गया। लोग उनके समर्पण भाव व शिक्षण के कायल हो गये। दोनों ही शिक्षक शिक्षण के साथ- साथ हर सामाजिक मंच से व्यक्तिगत व सामूहिक रूप में सरकारी शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते हुए नि:शुल्क रूप में मिलने वाली सुविधाओं से लोगों को अवगत कराते रहते और सरकारी स्कूलों में उनके नौनिहालों का प्रवेश कराने हेतु प्रयासरत रहते। कुछ वर्षों बाद लटवाल जी सेवानिवृत्त हो गये, मगर शिक्षिका उनके पदचिह्नों पर चलती रहीं।

लटवाल जी का एकमात्र पुत्र पहले ही फौज में भर्ती हो चुका था, जिसका अब विवाह कर दिया गया। उससे बड़ी दो पुत्रियाँ पहले ही ब्याही जा चुकी थीं, जो अब अपने परिवार के साथ हल्द्वानी में मकान बनाकर रह रही थीं। पुत्र विवाह के साल भर में ही उन्हें पोते का सुख प्राप्त हो गया, पर बहू-बेटा अब हल्द्वानी जाने की जिद करने लगे। समस्त आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित सड़क किनारे बना हुआ घर उन्हें रास नहीं आने लगा। लटवाल जी चाहते, पोता व बहू यहीं घर पर ही रहें। पोता नजदीकी सरकारी स्कूल में पढ़े। बढता विवाद इस शर्त पर शान्त हुआ कि पोता पच्चीस किमी दूर प्राइवेट स्कूल में पढ़ाया जायेगा और उसकी पढ़ाई का सारा खर्च दादा द्वारा उठाया जाएगा। हालातों ने लाल सिंह को मजबूर कर दिया। क्या करूँ? कहते हुए उन्होंने एक ठण्डी आह भरी और कुदाल पकड़ अदरक लगाने खेतों की ओर चल दिये।

संस्कार संदेश

हमें अपने कर्तव्यों के प्रति सजग और ईमानदार होना चाहिए, तभी हम दूसरों को सही राह दे पायेंगे।

लेखक

दीवान सिंह कठायत (प्र०अ०) रा० आ० प्रा० वि० उडियारी बेरीनाग (पिथौरागढ़)

संस्कार संदेश
दिनांक - 20-01-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 05/2024
बाल कहानी
दिन - शनिवार
मिशन शिक्षण संवाद

कड़वा सबक

"अरे! क्या बात है, दोनों क्यों लड़ रहे हो?" शिक्षिका मंजुल ने रोहित और अनुज को लड़ते देखकर दोनों को अलग करते हुए पूछा।
"मैडम! अनुज ने मेरा पेन चुराया है।" रोहित ने कहा।
"नहीं मैडम! रोहित झूठ बोल रहा है। यह मेरा ही पेन है।" अनुज ने आँखें तरेरते हुए जबाब दिया।
कक्षा में चोरी जैसी गम्भीर घटना होते देख मंजुल को मन ही मन बहुत पीड़ा हुई। रोहित विद्यालय का होनहार एवं विनम्र छात्र था। वह अपने सभी शिक्षकों की आँखों का तारा था। अनुज बहुत नटखट स्वभाव का था। मंजुल को आभास था कि अनुज झूठ बोल रहा है, मगर बिना सबूत के वह सिद्ध नहीं कर सकती थी। अतः उन्होंने रोहित को समझा-बुझाकर वह पेन अनुज को दिलवा दिया।
कक्षा में चोरी की घटना से मंजुल का दिल टूट गया। वे प्रतिदिन प्रार्थना सभा में नैतिक शिक्षा देने वाली लघुकथाएँ सुनाती थीं। विद्यार्थियों को उसका अनुसरण हेतु प्रेरित करती थीं।
कक्षा में चोरी की घटना से मंजुल का दिल टूट गया। वे प्रतिदिन प्रार्थना सभा में नैतिक शिक्षा देने वाली लघुकथाएँ सुनाती थीं। विद्यार्थियों को उसका अनुसरण हेतु प्रेरित करती थीं।
कुछ दिनों बाद अनुज का जन्मदिन आया। अगले दिन भोजनावकाश के समय अनुज रुआँसा होकर मंजुल के पास आया।
"मैडम! किसी ने मेरा कलर बॉक्स चुरा लिया है।"
"क्या...?" मंजुल बहुत ही चिन्तित हुई। कक्षा में चोरी की दूसरी घटना घटित हो गयी थी। अब उन्हें लगा कि शायद उस दिन अनुज पर उन्हें गलत संदेह हुआ।
"कैसा था कलर बॉक्स?" उन्होंने अनुज से पूछा।
"वह नीले रंग का बड़ा डब्बा था। उसमें स्केच, वैक्स, वाटरकलर, पेंसिल सभी तरह के रंग थे।"
मंजुल ने बच्चों को कक्षा में जाने का आदेश दिया-, "सभी कक्षा में बैठो। अपना बस्ता चेक करवाओ।" सबने बस्ता चेक करवाया, परन्तु किसी पर कलर बॉक्स नहीं मिला।
"अब पापा मेरी बहुत पिटाई लगायेंगे।" कहकर अनुज जोर-जोर से रोने लगा। सहसा रोते हुए अनुज के कन्धे पर किसी ने हाथ रखा। उसने सर ऊपर करके देखा तो रोहित खड़ा था। रोहित के हाथ में वही खूबसूरत सा कलर बॉक्स था। उसे देखते ही अनुज की आँखें चमक उठीं! उसने तुरन्त रोहित के हाथ से वह कलर बॉक्स छीना और पूछा-, "ये तुम्हें कहाँ मिला?"
"ये मेरे पास था।" रोहित कहकर चुप हो गया।
"तुमने बॉक्स वापस भी कर दिया तो चोरी क्यों किया था?" अनुज से विस्मय सहित पूछा।
"तुम्हें सबक सिखाने के लिए।" रोहित ने कहा-, "जब उस दिन मेरा प्रिय पेन मेरे पास न रहा तो इसी प्रकार से मुझे भी दुःख हुआ था।" यह सुनकर अमन का मुँह लटक गया ।
"चोरी करना पाप है। मैडम एक दिन बता रही थीं।" अब तक दोनों का वार्तालाप सुन रही दिशा ने कहा।
रोहित ने अनुज के आँसू पोंछे और अपने कृत्य के लिए माफी भी माँगी। अनुज को अपनी गलती का एहसास हो चुका था उसने रोहित से माफी माँगी-, "रोहित! मुझे माफ़ कर दो। तुम्हारा पेन मैंने ही लिया था"
मंजुल मैडम ने अनुज की पीठ थपथपाकर कहा-, "सुबह का भूला यदि शाम को वापस घर आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते।"
"हमारे पास जो भी संसाधन हों, उसी में हमें खुश रहना चाहिए।" रोहित ने अनुज की तरफ देखा और मुस्कुरा दिया। अनुज ने अगले ही दिन रोहित का पेन वापस करने का वादा किया। इसके बाद दोनों में प्रगाढ़ मित्रता हो गयी।

संस्कार सन्देश

चोरी करना सबसे घृणित और निन्दनीय कार्य है, अतः हमें चोरी नहीं करना चाहिये।

लेखिका
दीप्ति सक्सेना (प्र०प्र०)
पू० मा० वि० कटसारी, बरेली (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 23.01.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 06/2024

बाल कहानी दिन- मंगलवार

मिशन शिक्षण संवाद

घमण्डी किसान

गुलरी गाँव में एक घमण्डी किसान तेजसिंह रहता था। वह अपनी फसलों की अच्छी उपज होने के कारण गुलरी गाँव में सबसे अधिक धनवान व्यक्ति था। इसलिए हमेशा अपने धन और वैभव को लेकर बड़ा अभिमान करता था और दूसरों को नीचे दिखाने की कोशिश करता था। एक दिन तेजसिंह अपने खेतों के लिए बीज खरीदने शहर गया हुआ था। वापस आते समय शाम होने लगी। रास्ते में एक सुनसान जगह अचानक उसकी गाड़ी खराब हो गयी। वह और उसके नौकर दोनों लगे रहे, पर गाड़ी ठीक न हुई। रात का अँधेरा भी गहरा होता जा रहा था। उस जगह अक्सर चोरों द्वारा लूटपाट की घटनाएँ होती रहती थी, यह सोंचकर तेजसिंह को थोड़ी घबराहट होने लगी थी, तभी किसी ने टॉर्च की रोशनी जलायी और कुछ लोग पास आने लगे। वे दो-तीन लोग थे और अपने चेहरे किसी कपड़े से ढके हुए थे।

तक कुछ समझ में आता, उन सभी ने आकर तेजसिंह और उसके नौकर को आकर जोर से पकड़ लिया और चाकू दिखाकर कहने लगे, "जो कुछ भी माल-रूपये हैं, सब निकालो! वरना हम खुद ही निकाल लेंगे।" एक आदमी तेजसिंह को गिराकर सीने पर चाकू रखकर बैठ गया। तेजसिंह स्वयं को बड़ा असहाय महसूस करने लगा। किन्तु इस रात के अँधेरे में कौन आएगा उसकी मदद को! यह सोंचकर बाकी बचे हुए पैसे और पहनी हुई अँगूठी व सोने की चेन आदि सब उन लुटेरों को देने के लिए उतारने लगा। तभी पुलिस की दो गाड़ियाँ तेजी से पास आकर रूकी और फटाफट बहुत सारे वर्दीधारी पुलिसकर्मियों ने उन सभी लुटेरों को बन्दूकें दिखाकर घेर लिया और चेतावनी दी कि यदि कोई चालाकी की, तो गोली चला देंगे। सभी लुटेरे पकड़े गये। तेजसिंह और उसका नौकर बच गये। तभी उजाले में तेजसिंह ने देखा, पुलिस के साथ उसके पड़ोसी रामू और हरी भी थे, जिनसे तेजसिंह कभी सीधे मुँह बात भी नहीं करता था। पुलिस वालों ने बताया कि इन दोनों लोगों ने ही हम सबको बताया था कि यहाँ तुम दोनों के साथ लूटपाट हो रही है। हम यहीं पड़ोस में बनी पुलिस चौकी पर रहते हैं, फौरन आ गये।" तेजसिंह ने हाथ जोड़ लिए और बोला रामू और हरी, तुम दोनों न होते तो आज ये लुटेरे शायद मेरी जान भी ले लेते। मुझे मुसीबत में देखकर तुम चाहते तो चुपचाप अपने घर जा सकते थे, लेकिन तुम लोगों ने भले इन्सान बनकर मेरी जान बचायी।" हरी ने कहा, "नहीं तेजसिंह, हमने तो बस पड़ोसी होने का फर्ज़ पूरा किया है। हम दोनों साइकिल से आ रहे थे, तभी तुम सब पर नजर पड़ी, तो वापस साइकिल से भागकर पुलिस चौकी पर सूचना दी।" उस दिन से बाद घमण्डी किसान तेजसिंह ने अपने धन और समृद्धि पर घमण्ड करना छोड़कर सबसे विनम्र व्यवहार करना शुरू कर दिया। तेजसिंह समझ चुका था कि मुश्किल के समय हमारे आसपास के लोग ही हमारी सहायता करते हैं।

संस्कार संदेश-

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने धन या शक्ति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

लेखिका-

शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 24.01.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 07/2024

बाल कहानी दिन- बुधवार

मिशन शिक्षण संवाद

चीकू

रोहन को एक दिन खेलते वक्त एक प्यारा सा खरगोश मिला। खरगोश को देखकर रोहन बहुत खुश हुआ। कुछ देर बाद रोहन और खरगोश एक दूसरे के साथ खेलने लगे। कभी रोहन खरगोश के पीछे भागता, कभी खरगोश रोहन के पास आता। रोहन ने खरगोश को गोद में उठा लिया और प्यार से सिर सहलाते हुए कहा-, "आज से तुम मेरे दोस्त हो। अब मैं तुम्हें चीकू कह कर बुलाऊँगा।" कुछ देर बाद रोहन ने चीकू को गोद से उतारते हुए कहा-, "अब शाम होने वाली है। मैं अपने घर जा रहा हूँ, तुम अपने घर जाओ!" इतना कह कर रोहन अपने घर की ओर चल दिया। कुछ ही देर में चीकू दौड़कर रोहन के आगे पीछे चलने लगा।

रोहन को चीकू पर तरस आया। वह उसे अपने साथ घर ले आया। घर आते ही माँ ने पूछा-, "इसे कहाँ से ले आये?" रोहन ने जवाब देते हुए कहा-, "माँ! ये चीकू है। मेरा मतलब खरगोश है। इससे मेरी दोस्ती हो गयी है, इसलिए मैंने इसका नाम चीकू रख दिया है। मैंने इससे कहा था कि तुम अपने घर जाओ! मैं अपने घर जाता हूँ, पर ये मेरे पीछे-पीछे चला आया।" "ठीक है, कोई बात नहीं। ले आओ इसे! पर चीकू का ध्यान रखना, यह बहुत छोटा है, कहीं इधर-उधर चला न जाये" माँ ने कहा। माँ ने रोहन और चीकू को दुलार किया। भोजन खिलाया और फिर दूसरे काम में व्यस्त हो गयी। कुछ देर में रोहन अपना होमवर्क करने लगा। चीकू कब बाहर निकल गया, किसी को कुछ खबर नहीं हुई। रात हो जाने के कारण रोहन कहीं दूर नहीं जा सका। सुबह होते ही रोहन ने चीकू को ढूँढने का बहुत प्रयास किया, पर चीकू का कहीं कुछ पता नहीं चल पाया। रोहन चीकू को याद कर बहुत उदास रहने लगा। माँ ने रोहन को समझाया, "चीकू बहुत छोटा था, उसको समझ नहीं थी इसलिए वह तुम्हारे साथ चला आया था। हो सकता है कि उसे जब घर की याद आयी होगी तो वह फिर अपने घर चला गया होगा, जिस तरह तुम खेलने जाते हो तो चले आते हो। इस तरह वह भी खेलकूद करके चला गया होगा। चीकू की असली खुशी उसके परिवार के साथ ही है। दोस्ती का मतलब साथ रहना नहीं, दोस्ती का मतलब दूर रहकर दोस्त के लिए प्रार्थना करना है कि वह हमेशा खुश रहे। तुम तो मेरे समझदार बच्चे हो, फिर तुम इस बात को क्यों नहीं समझ रहे हो? क्या तुम अपनी माँ के बिना रह सकते हो दोस्तों के साथ?" "नहीं माँ! मैं आपके बिना नहीं रह सकता!" "तब तुम ही बताओ! चीकू कैसे रह लेता?" रोहन को माँ की बात समझ में आ गयी। रोहन ने आँसू पोंछे और चीकू के लिए प्रार्थना की, "मेरा दोस्त चीकू जहाँ भी रहे, खुश रहे!"

संस्कार सन्देश-

प्रेम स्वार्थी नहीं होना चाहिए। स्वार्थ में आसक्ति होती है। प्रेम हमेशा अपनों के लिए प्रार्थना का नाम है।

लेखिका-

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार संदेश दिनांक - 26.01.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 08/2024

बाल कहानी दिन - शुक्रवार

मिशन शिक्षण संवाद

शुभ-प्रभात

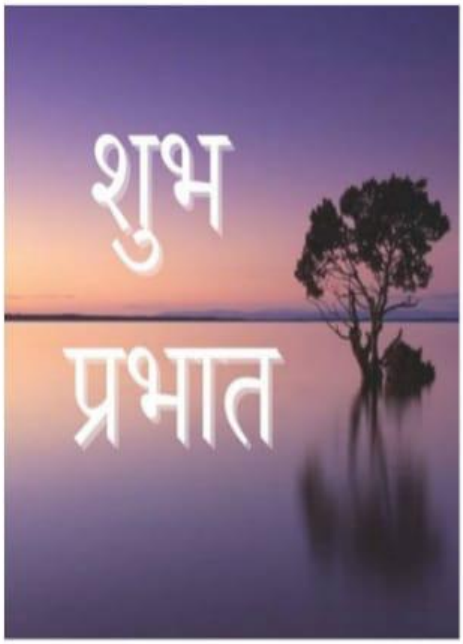

कितना अपनापन लिए लगती थी प्रातः काल की वह बेला, जब सूर्योदय से पूर्व ही नित्य मेहरू का सुदूर गाँव से शुभ प्रभात सन्देश सुबह-सुबह शहर में सुरेश को मिल जाता। उसे लगता कि वह चाहे तन से शहर में है लेकिन मन से अब भी अपने उन साथियों के साथ ही गाँव में है, जिनके संग खेलकर उसका यादगार बचपन बीता था। वो लमकटिया की धार, गरुड़िया गधेरा और लुटाणी के बंजर खेत सहज ही मानस पटल पर छा जाते। जहाँ वे दोनों निश्छल दोस्त जानवर चराते हुए मस्ती किया करते। हर छः महीने में ग्वाल देवी पूजा करते और प्रसाद रूप में बनी टिन के डिब्बे में पकायी खीर तिमुल के पत्तों में परोसकर एक साथ चाटकर खाते। लीसे के खाली गमले में घूँट-घूँट पानी पिया करते। सब सहज ही दिलो-दिमाग पर उभर आता और उन सुहानी यादों के सहारे सारा दिन शुभ-शुभ बीत जाता।

मगर कुछ समय पूर्व से मेहरू शुभ प्रभात सन्देश के साथ रूपयों की माँग करने लगा। कभी पत्नी का इलाज करने, कभी गाँव में मन्दिर की मरम्मत आदि-आदि। सुरेश उसके खाते में राशि डाल दिया करता, जिसे वह झटपट ए० टी० एम० से निकाल लेता। अब मेहरू की डिमाण्ड सुरसा के मुँह की तरह खुलने लगी। वह अब अधिक रूपयों की माँग करते हुए दोपहर-शाम हो या रात, शुभ प्रभात सन्देशों को भेजने लगा। उसके व्यवहार में हुए परिवर्तन पर सन्देह होकर सुरेश ने गाँव के नरू चाचा से मेहरू की जानकारी चाही तो उन्होंने बताया-, "अरे वो तो अब भयंकर शराबी हो गया है। लोगों को ठगकर रूपये ऐंठता है। फिर दिन-भर भुत्त हो सारे गाँव को गाली बकता है। तुम उसके झाँसे में मत आना। वो तुम्हें भी ठग लेगा।" कहते हुए उन्होंने फोन काट दिया। सुरेश को काटो तो खून नहीं। वह नरू चाचा की बातें सुनकर सन्न रह गया। उधर उसके मोबाइल पर मेहरू का बार-बार शुभ प्रभात मैसेज धपधपा रहा है।

संस्कार सन्देश-

हमें शराबी-कबाड़ी लोगों से सदैव दूर रहने का प्रयास करना चाहिए।

लेखक-

दीवान सिंह कठायत (प्र०अ०)
रा० आ० प्रा० वि० उडियारी, पिथौरागढ़

संस्कार संदेश दिनांक - 29.01.2024

दैनिक नैतिक प्रभात - 09/2024

बाल कहानी दिन- सोमवार

मिशन शिक्षण संवाद

तालियाँ

इस समय विद्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोह के लिए सभी बच्चे और शिक्षक बड़े जोर-शोर से तैयारी में लगे थे। घर जाकर सभी अपने-अपने रोल का रिहर्सल करते थे। कोई बच्चा राजा, कोई अनपढ़, कोई सिपाही, कोई जोकर, तो कोई वीर देशभक्तों का अभिनय कर रहा था। रोहित को छुपकर उन बच्चों को अभिनय करते देखना बहुत अच्छा लगता था। रोहित कक्षा छः का छात्र था, जो पढ़ाई में ठीक-ठाक ही था, लेकिन न जाने क्यों उसे प्रतिदिन विद्यालय जाना बिल्कुल भी पसन्द नहीं था। वह विद्यालय बहुत कम आता था। जब भी गुरूजी बुलाने जाते, तो वह घर से भाग जाता। रोहित के माता-पिता भी इस बात से परेशान रहते थे। आखिर आज गणतन्त्र दिवस का दिन आ ही गया। सभी के मन में देशभक्ति भावना और उत्साह हिलोरें ले रहा था और विद्यालय में सर्वप्रथम ध्वजारोहण और प्रभातफेरी के बाद सभी बच्चों को बैठाया गया। बहुत सारे गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत कार्यक्रम हुआ। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रगान हुआ, फिर माँ सरस्वती के पूजन के बाद सभी बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सभी की प्रस्तुति देखकर दर्शक खूब तालियाँ बजा रहे थे। गुरूजी ने भाषण दिया और बताया कि-, "देशभक्ति यही है कि हम सभी अपने कर्तव्य अच्छी तरह निभाएँ। देशप्रेम का सबसे बेहतर तरीका यही है कि हम अपने दायित्वों के प्रति जागरूक और ईमानदार बनें, वही इस तिरंगे और देश का वास्तविक सम्मान होगा। यही देशभक्तों के प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धाँजलि होगी।" सभी प्रतिभागी बच्चों को ईनाम में बहुत सारी चीज़ें दी गयीं। इसके बाद सभी बच्चों को लड्डू दिये गये। आज रोहित भी विद्यालय आया था। सभी कार्यक्रम देखकर रोहित ताली तो बजा रहा था, लेकिन उसके भी मन में ये इच्छा हो रही थी कि काश! वह भी इस मंच पर कुछ करके दिखाता, तो सभी लोग उसके लिए भी ऐसे ही तालियाँ बजाते। सब घर चले गये। रोहित भी आज विद्यालय से सच में स्वप्रेरित होकर लौट रहा था। उसने पूरे विश्वास से अपने मन में ठाना था कि अगला गणतन्त्र दिवस आने तक इस मंच पर जाकर स्वयं को साबित करूँगा। इन सभी बच्चों की तरह मेरे लिए भी तालियाँ बजेंगी। उस दिन से प्रतिदिन रोहित विद्यालय आता। मन लगाकर पढ़ाई करता। घर पर भी खूब मेहनत करके पढ़ता। उसके बदले हुए रूप को देखकर गुरूजी भी तारीफ करते थे। वार्षिक परीक्षा में पूरी कक्षा में दूसरा स्थान लाया। विद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में कक्षा के प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कृत किया गया। रोहित गर्व से मंच पर बाकी बच्चों के साथ खड़ा था और दर्शक उसके लिए भी तालियाँ बजा रहे थे। आज उसने दिखा दिया कि मेहनत करके सब कुछ पाया जा सकता है।

संस्कार संदेश-

विद्यालय वह स्थान है, जहाँ से आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा मिलती है। अपने कर्तव्यों को पूरा करना ही सच्ची देशभक्ति है।

लेखिका-

शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर (उ०प्र०)

संस्कार संदेश दिनांक - 30.01.2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 10/2024
बाल कहानी दिन- मंगलवार
मिशन शिक्षण संवाद
जिज्ञासा

"माँ! आज क्या मैं स्कूल नहीं जाऊँ?"
"क्या हुआ तृप्ति बिटिया, तबियत तो ठीक है? देखूँ, कहीं बुखार तो नहीं है! अरे! तुम्हें बुखार भी तो नहीं है फिर दिक्कत क्या है? आखिर तुम स्कूल क्यों नहीं जाओगी? "माँ! बस, ऐसे ही कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। सोच रही हूँ, आज आपके साथ घर के कामों में हाथ बटाऊँ.. स्कूल न जाऊँ?"
"मेरी बच्ची! अगर तुम्हें हाथ ही बँटाना है तो स्कूल से आकर भी हाथ बँटा सकती हो। वैसे भी आज शनिवार और कल रविवार है। कल तो तुम्हारी छुट्टी है ही, तो आज स्कूल न जाकर अपना दिन क्यों बेकार करोगी!"
"ठीक है माँ! मैं जाती हूँ स्कूल। बस मैंने देखा कि आप बहुत काम करती हैं तो मुझे लगा कि मुझे आपकी मदद करनी चाहिए। माँ! एक बात पूछूँ, बताएँगी आप?
"हाँ बिटिया जल्दी पूछो! तुम्हें स्कूल के लिए देर हो रही है।"
"माँ! यह बताइये कि आप भी रोज-रोज स्कूल जाती थी?"
"हाँ! मैं भी प्रतिदिन स्कूल जाती थी। एक दिन भी स्कूल में अनुपस्थित नहीं होती थी।"
"फिर माँ आपने कोई नौकरी क्यों नहीं की? आप तो हमेशा मुझे बताती हैं कि पढ़-लिखकर बिटिया कुछ बन जाओगी, फिर आप क्यों नहीं बनी?"
"बिटिया! शिक्षा का मतलब नौकरी करना ही नहीं होता है। शिक्षा तो जीवन है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा प्राप्त करके हम अपना जीवन अच्छी तरह से बिता सकते हैं। मुझे गर्व है कि मैं शिक्षित हूँ। मैं तुम्हें प्रतिदिन घर में एक घण्टा पढ़ाती हूँ। तुम्हारा होमवर्क कराती हूँ। घर का हिसाब-किताब कर लेती हूँ। रही बात नौकरी की, तो मेरी परिस्थितियाँ ठीक नहीं थी। आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी, इसलिए पिताजी ने जल्द ही विवाह कर दिया। कुछ बनने का मौका ही नहीं मिला। मैं चाहती हूँ कि तुम पढ़-लिखकर अपना और मेरा सपना पूरा करो। कुछ बनकर दिखाओ और यह तभी सम्भव हो पायेगा, जब तुम प्रतिदिन स्कूल समय से जाओगी, मन लगाकर पढ़ोगी।" "ठीक है माँ! मैं स्कूल जा रही हूँ। मन लगाकर पढ़ूँगी और एक दिन कुछ न कुछ बन जरूर जाऊँगी। अगर नहीं बन पायी तो कम से कम एक अच्छी गृहिणी आपकी तरह जरूर बनूँगी।"
यह कहकर माँ की लाडली बेटी स्कूल चली गयी और माँ प्रसन्नचित्त होकर उसे जाते हुए देख रही थी।

संस्कार सन्देश-
जीवन में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है। मानव जीवन शिक्षा के बिना व्यर्थ है।

लेखिका-
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर-प्रदेश)

संस्कार सदेश दिनांक - 31-01-2024
दैनिक नैतिक प्रभात - 11/2024
बाल कहानी दिन - बुधवार
मिशन शिक्षण संवाद

पेड़-पौधे

एक बार दीपक नाम का लड़का किसी जंगल में गायों को चराने के लिए गाँव के अन्य लोगों के साथ गया। उस समय उसके माता-पिता कहीं बाहर गये थे। घर पर बूढ़े दादा-दादी ही थे, इसलिए गायों को चराना जरुरी था।

जंगल में बहुत से पेड़-पौधों और पक्षियों को देखकर उसे बहुत ही अच्छा लगा। जंगल में चारों ओर हरियाली थी। जंगल की अपूर्व शोभा को देखकर वह बहुत ही प्रसन्न हुआ। जंगल में एक ओर साफ पानी की नदी थी, जिसका जल बहुत ही स्वादिष्ट और पीनेलायक था। सभी लोग अपनी-अपनी गायों को उस नदी में पानी पिलाने के लिए ले जाते। दीपक भी अपनी गायों को लेकर उस नदी पर गया और नदी को शोभा को देखकर वह बहुत खुश हुआ। उसने नदी में पानी पिया और स्नान किया तथा दिनभर की थकान मिटायी। शाम को सभी के साथ वह गायों को लेकर घर लौट आया।

रात्रि में उसके माता-पिता घर वापस लौट आये। दीपक ने पिताजी से कहा कि-, "पिताजी! आज जंगल में बहुत मजा आया। अब मैं रोज गायों को चराने जाऊँगा। जंगल में बहुत से पक्षियों को मैंने देखा, साथ ही वहाँ के पेड़-पौधों को देखकर मन्त्र मुग्ध हो गया। ऐसी सुन्दरता मैंने कभी नहीं देखी।" उसके पिताजी ने कहा कि-, "अभी तुम्हारे पढ़ने के दिन हैं। अगर तुम गायें चराओगे तो फिर मैं क्या करूँगा और पढ़ाई कौन करेगा? हाँ! हमारे यहाँ के जंगलों में सभी सभी औषधीय वृक्ष पाये जाते हैं। इनसे सभी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।"

दीपक बोला-, "पिताजी! जब वृक्षों में इतने गुण हैं तो लोग क्यों मेडीकल की दवाइयाँ लेते हैं और डॉक्टरों को क्यों दिखाते हैं। इन्हीं वृक्षों से अपनी बीमारियों को ठीक क्यों नहीं करते हैं?"

उन दोनों की बातें सुन रही उसकी माँ ने कहा कि-, "अब धीरे-धीरे आयुर्वेद वापस आ रहा है। अंग्रेजी दवाइयों को अधिक समय तक खाने से ये अब लाभदायक नहीं रही हैं। लोगों को इनसे तुरन्त तो जरूर आराम मिल जाता है, लेकिन रोग जड़ से खत्म नहीं होता है और समय आने पर बार-बार अपना प्रभाव दिखाता है, जबकि औषधियों से बीमारी जड़ से खत्म हो जाती है और फिर लौटकर नहीं आती है। हाँ! इनसे बीमारी जड़ से खत्म करने में समय जरुर लगता है।"

दीपक के पिताजी ने दीपक की माँ की बात का समर्थन किया और बोले-, "हाँ बेटे! तुम्हारी माँ ठीक कह रही है। अब लोग घरेलू बीमारियों का घर पर ही इलाज करने लगे हैं। जैसे जुकाम, शारीरिक थकान, फोड़े-फुन्सी, कब्ज, सूजन, मोच, दर्द आदि अनेक बीमारियों का घर पर ही इलाज सम्भव है। मैं घर पर ही इन बीमारियों का इलाज करता हूँ और जरुरत पड़ने पर वैद्य के पास जाता हूँ। डॉक्टरों के चक्कर में नहीं पड़ता हूँ। हाँ! ऐलोपैथिक इलाज भी बुरा नहीं है। किन्हीं-किन्हीं बीमारियों, भीषण दुर्घटना और आ ॅपरेशन में हमें इन्हीं का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि तब हमारे पास इतना समय नहीं होता है कि हम इन्तजार कर सकें।"

"पिताजी! आज आप दोनों ने हमें बहुत ही बढ़िया, उपयोगी, ज्ञानवर्धक जानकारी दी है। पेड़-पौधे जलाऊ लकड़ी, फल-फूल, सब्जी, इमारती लकड़ी के अलावा दवाइयाँ भी हमें देते हैं। इसे मैं सभी बच्चों को स्कूल में बताऊँगा और मैं इस विषय पर एक निबन्ध भी लिखूँगा।" दीपक कहकर बहुत खुश हुआ और पढ़ने बैठ गया।

संस्कार संदेश

हमें पेड़-पौधों का महत्व समझना चाहिए और सभी को बताकर इनकी सुरक्षा करनी चाहिए।

लेखक
जुगल किशोर त्रिपाठी प्रा० वि०- बम्हौरी, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)